भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 3267

दिनांक 21 मार्च, 2023

कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

3267. श्रीमती शर्मिष्ठा सेठी:
श्री जी. एम. सिद्देश्वर:

क्या **कृषि और किसान कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार कृषि और किसानों के जीवन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से अवगत है;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;
(ग) क्या किसानों को ऐसे प्रभावों से बचाने के लिए कोई कार्य योजना तैयार की गई है या विचाराधीन है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(घ) क्या सरकार ने जलवायु परिवर्तन के प्रति भारतीय कृषि के लचीलेपन को बढ़ाने के लिए अनुसंधान करने की कोई पहल की है; और
(ङ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

कृषि और किसान कल्याण मंत्री
(श्री नरेन्द्र सिंह तोमर)

(क) एवं (ख): जी, हां। भारत सरकार को कृषि और किसानों के जीवन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में जानकारी है। देश के विभिन्न भागों में स्थित नेटवर्क केंद्रों द्वारा कृषि संबंधी गहन फील्ड और सिम्यूलेशन अध्ययन किए गए हैं। जलवायु परिवर्तन प्रभाव का मूल्यांकन 2050 एवं 2080 की अनुमानित जलवायु को ध्यान में रखते हुए फसल सिम्यूलेशन मॉडल का प्रयोग करते हुए किया गया। अनुकूलन उपायों को न अपनाने के कारण भारत में बारानी या वर्षा आश्रित (रेनफेड) चावल की पैदावार 2050 में 20% तक तथा 2080 में 47% कम होने का अनुमान है जबकि सिंचित चावल की पैदावार 2050 में 3.5% तक तथा 2080 में 5% तक कम होने का अनुमान है। जलवायु परिवर्तन के कारण गेहूं की पैदावार महत्वपूर्ण स्थानीय और अस्थायी जलवायु परिवर्तनों के कारण शताब्दी के अंत में 2050 में 19.3% तक तथा 2080 में 40% तक कम होने का अनुमान लगाया गया। जलवायु परिवर्तन के कारण 2050 और 2080 में खरीफ मक्के की पैदावार में क्रमश: 18 और 23% तक कमी आने का अनुमान है। जलवायु परिवर्तन से फसल पैदावार में कमी आती है और उत्पाद की पोषक गुणवत्ता कम हो जाती है। सूखे जैसे चरम हालात खाद्य और पोषक तत्व उपभोग को प्रभावित करते हैं, तथा किसानों पर इसके प्रभाव को प्रभावित करते हैं।

(ग): जी, हां। भारत सरकार ने कृषि को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाने के लिए स्कीम/योजनाएं तैयार की हैं। राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य-योजना (एनएपीसीसी) के तहत राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए) इनमें से एक है। मिशन का उद्देश्य भारतीय कृषि को परिवर्तनशील जलवायु के सर्वाधिक अनुकूल बनाने के लिए रणनीतियों को विकसित करना और उसे लागू करना है।

(घ) से (ङ): जी, हां। बदलती जलवायु में सतत घरेलू खाद्य उत्पादन की चुनौतियों को पूरा करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने 2011 में 'राष्ट्रीय जलवायु अनुकूलनशील नवोन्मेषी कृषि' (नेशनल इनोवेशन्स इन क्लाइमेट रिजिलिएंट एग्रीकल्चर) (निक्रा) नामक एक फ्लैगशिप नेटवर्क अनुसंधान परियोजना शुरू की। परियोजना का उद्देश्य कृषि में जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों को विकसित करना और बढ़ावा देना है जिसमें देश के संवेदनशील क्षेत्रों पर ध्यान दिया गया है और सूखा, बाढ़, पाला, लू आदि जैसे चरम मौसम हालातों से ग्रस्त जिलों और क्षेत्रों को परियोजना के परिणामों से मदद मिलती है। इससे ऐसे चरम मौसम हालातों के साथ निपटने में सहायता होती है। इसलिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अल्पकालीन और दीर्घकालीन अनुसंधान कार्यक्रम चलाए गए हैं जिसमें फसल, बागवानी, पशुधन, मात्स्यिकी और कुक्कुट पालन को शामिल करते हुए अनुकूलन और न्यूनीकरण उपायों का समावेश किया गया है। इस परियोजना के प्रबलित क्षेत्रों में शामिल हैं

(i) सर्वाधिक संवेदनशील जिले और क्षेत्रों की पहचान करना,

(ii) अनुकूलन और न्यूनीकरण के लिए फसल किस्मों और प्रबंधन प्रणाली को विकसित करना,

(iii) पशुधन मात्स्यिकी और कुक्कुट पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का मूल्यांकन करना तथा अनुकूलन रणनीतियों की पहचान करना। वर्ष 2014 से 1888 जलवायु अनुकूलन किस्में विकसित की गईं, इसके अतिरिक्त, 68 स्थान विशिष्ट जलवायु अनुकूलन प्रौद्योगिकियां विकसित की गईं और किसान समुदायों द्वारा व्यापक रूप से अपनाने के लिए इनका प्रदर्शन किया गया है।

****